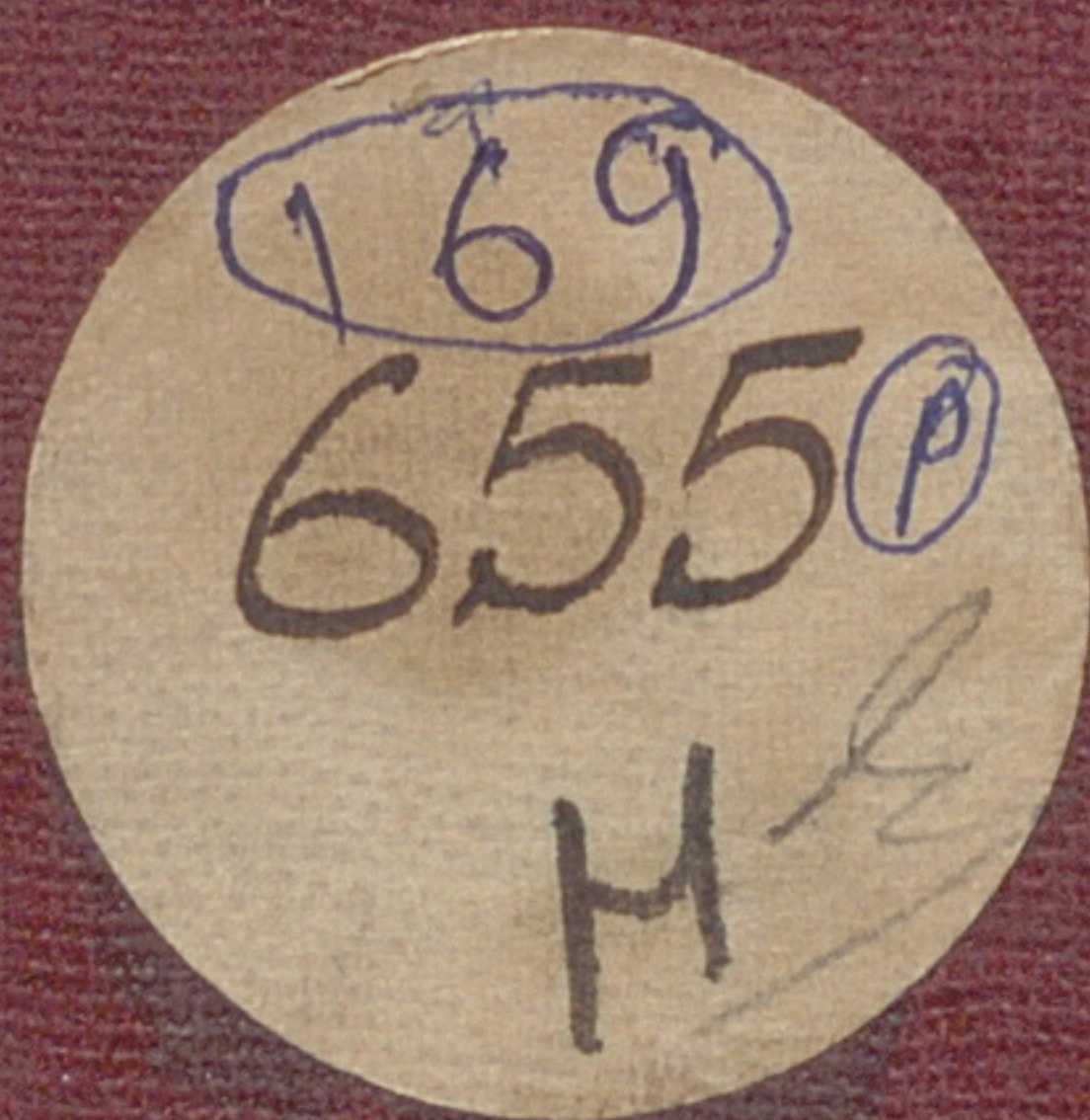




Microfilm

2/10/11

891.431

14337 R

1265
10/21

राष्ट्रीय-गायन

अथवा

(उबलता खून)

समय आन पहुंचा है वीरो ! कभी न पग पीछे धरना ।
प्राणों की बाजी देकर के, है स्वतन्त्र भारत करना ॥

“चन्द्र”

रचयिता—

हजारी लाल

प्रतिष्ठानपुर (भूसी)

प्रयाग

सर्वाधिकार सुरक्षित] १९३०

[मूल्य -]



निवेदन

मैं कवि नहीं, कविता मर्मज्ञ नहीं और नहीं हिन्दी साहित्य का जानकार हूँ। हिन्दी में कविता करना मेरी सब प्रकार से धृष्टता हो है। हिन्दी साहित्य के पिंगल का ज्ञान मुझे बिलकुल नहीं है इस लिये मेरे ये गायन एक प्रकार से तुक-बन्दी ही हैं। अपनी अज्ञता का अनुभव करता हुआ भी जो मैं ये कुछ पद लेकर आप महानुभावों की सेवा में उपस्थित हुआ हूँ, यह मेरा बाल चापल्य ही है, किन्तु मैं करूँ क्या? देश की उठती हुई जागृति की लहर में मैं अपने हृदय के आवेश को रोक नहीं सका। उसी का परिणाम यह है कि मैं अयोग्य होता हुआ भी अपनी तुच्छ भेंट लेकर देश के नवयुवकों के सामने हाजिर हुआ हूँ। चाहे इन पदों में सौन्दर्य न हो साहित्यिक अनेक भूलें भी होंगी ही, किन्तु ये मेरे अन्तास्थल के भाव हैं। इस लिये इन्हें मेरा लड़कपन ही समझ कर विश्व पाठक वृंद प्रसन्न होंगे क्यों कि—

जो बालक कछु अनुचित करहीं।

सुनि पितु मात मोद मन भरहीं ॥

हजारीलाल

भूसी-प्रयाग

* वन्देमातरम् *

राष्ट्रीय-गायन

(१)

प्रार्थना

हनुमत बिनय है तुमसे, कहियो प्रभू से जाकर ।
भारत पै दुःख भारी हर लें तुरन्त आकर ॥
ये दीन हैं दुखाने, संकट में पुत्र सारे ।
तुम बिन न कोई हमारे, किस से कहूं बुला कर ॥
अब खून की पियासी धरणी ये हो गई है ।
बन्दर औ भालुओं को, आवो यहाँ लिवा कर ॥
करके बिलम्ब अइहौ, जीते न तन को पइहौ ।
समझाइयो प्रभू से आयें वो दल सजा कर ॥
हम हो गये निरासे बैठे तुम्हारे आसे ।
मरने को अब हैं जाते आशायें दिल में लाकर ॥

(२)

भगवान भारतवर्ष को आज़ाद जल्दी कीजिये ।
देश अरु निज जाति पै मरने की शक्ती दीजिये ॥

सूलियाँ चढ़ जाँय पर मुख हाथ तक आवे नहीं ।
 प्राण न्यौछावर करें यह भक्ति हमको दीजिये ॥
 कर दिया वीरान भारत भूखों सब मरने लगे ।
 हो गुलामी जिस तरह से दूर, वैसा कीजिये ॥
 परतन्त्रता की बेड़ियाँ संकट अधिक अब देरहीं ।
 इस विदेशी शान को बरबाद जल्दी कीजिये ॥
 कीजिये आयुशमन गाँधी जवाहिर लाल को
 देश के झंडे को ऊपर अब तो भगवन कीजिये ॥

(३)

तुम्हें शंख मोहन बजाना पड़ेगा,
 ये भारत को फिर से उठाना पड़ेगा ।
 पड़े वीर आलस में सोते हुये जो,
 उन्हें अब तो आके जगाना पड़ेगा ॥
 हुआ जा रहा है जो भारत गौ गारत,
 इसे आके तुमको बचाना पड़ेगा ।
 छिड़ा युद्ध भारी अहिंसात्मक जो,
 तुम्हें सारथी बन जिताना पड़ेगा ॥
 हुये गिरफ्तार, गाँधी बाबा हमारे,
 अब घर घर में गाँधी बनाना पड़ेगा ।
 छुड़ा के गुलामी से भारत को फौरन,
 तुम्हें इनसे बदला चुकाना पड़ेगा ॥

जो मालो खजाना, वो ढो, ले गये हैं,

उसे फिर से वापस दिलाना पड़ेगा ।

जो करते चले जाते भारत को गारत

उन्हें अब यहां से हटाना पड़ेगा ॥

हुये हैं शहीदे वतन जितने अब तक,

उन्हें फिर से जग में बुलाना पड़ेगा ।

(४)

गान्धी गौरव

धन धन है गाँधी बाबा को जिसने भारत को जगा दिया ।

चलने को हिंसा शून्य मार्ग उसने है सब को बता दिया ॥

जिसने इस मरी आत्मा को फिर से है कैसा जिला दिया ।

कितना बल पौरुष देशों के नव युवकों में है बढ़ा दिया ॥

कितने को उसने इस जग में है खदर धारी बना दिया ।

रेली ब्रदर्स औ यूरूप को जिसने अब है अति रुला दिया ॥

भौकर शाही के गढ़ को अपने बल से ही दिला दिया ।

आतंक सभी देशों में भी उसने अपना है जमा दिया ॥

चरखे के बल से जिसने यूरूप को चरखा बना दिया ।

हाउस आफ लार्ड कामन को चक्र में कैसा फसा दिया ॥

खलु वाइसराय की चालों से भारत को कैसा बचा लिया ।

सारी पोल खोल उनकी नेताओं को है लजा दिया ॥

[४]

(५)

जवाहिर-स्तव

ये जवाहिर लाल तेरे ही लिये कुर्बान हूँ ।
इस मात के ऊपर सदा धरता रहा अरमान हूँ ॥
तूही लौता पुत्र है इस मात भारत के लिये ।
तन मन सभी अर्पण करूँ तूँ जान ले ईमान हूँ ॥
दे दिया सर्वस्व जिसने देश के उपकार में ।
उस बीर योधा के लिये रखता सदा मैं ध्यान हूँ ॥
भर दिया भारत के युवकों में जो ऐसी आत्मा ।
नव बीर भारत पुत्र संग देने को जाता मान हूँ ॥
त्याग मूर्ती उस अनोखे का मैं स्वागत क्या करूँ ।
अब तो मर मिटने का केवल मैं भी तेरा प्राण हूँ ॥

(६)

धर्म

इस देश पर मरना ही केवल हर युवक का धर्म है ।
खून गर्दन से बहा देना ही सब का कर्म है ॥
देश की इज्जत के आगे जग में है कुछ भी नहीं ।
जान भी जाये तो क्या हमको नहीं कुछ भर्म है ॥

धन धर्म इज्जत और कर्म मिट्टी बराबर हैं सभी ।
 माता कलंकित है तुम्हारी, तुमको युवको शर्म है ॥
 जाते बिदेशों में कहीं तो लोग हँसते हैं सभी ।
 इज्जत तुम्हारी कुछ नहीं कहते बड़ा वेशर्म है ॥
 निज देश को आजाद कर जब तक नहीं दिखलावोगे ।
 जीना तुम्हारा है वृथा, सोचो तो क्या यह मर्म है ॥
 इस लिये इक बारगी आकर के अब सब मर मिटो ।
 शीश को आगे भुका बनना नहीं अब नर्म है ॥

(७)

प्रतिज्ञा

सत्याग्रही बन देश का, उद्धार करगे ।

निज जानो माल देश पै कुर्बान करेंगे ॥

गोली चलाये गर कोई, सीना बढ़ायेंगे ।

धर कर कदम आगे को, न पीछे हटायेंगे ॥

धजियाँ उड़जाँय, न मुख हाय लायेंगे ।

चढ़ने को सूतियों पै, हम गर्दन बढ़ायेंगे ॥

माता जो प्यासी खून की गर्दन कटायेंगे ।

आजादी को इस देश में फिर से बुलायेंगे ॥

इस खूनी झण्डे को अब, ऊपर उठायेंगे ।

हम विश्व में आजादों का डंका बजायेंगे ॥

(८)

उठाना देश भारत का यही दिल में हमारे है ।

छुड़ाना इस गुलामी से, यही दिल में हमारे है ॥

दिवाने देश आज़ादी के, किधर सोते पड़े हो तुम ।

डटो संग्राम में आई, यही दिल में हमारे है ॥

मिलावो दिल से ^{दिल} भाई, वतन पर जान देने का ।

कटाना देश पर गरदन, यही मन में हमारे है ॥

जिलावतनी बहुत से हैं, शहीदे बन गये कितने ।

मिलाना देश बिछुड़ों का, यही दिल में हमारे हैं ॥

करे कातिल कत्ल हमको, जिला वतनी भी गर दें ।

डरें फिर क्यों, फ़क़त मरना, यही जब दिल हमारे है ॥

मरें उद्देश्य यह धर कर जनम भारत में फिर होवै ।

करें कुर्बान, फिर अपने को, यही दिल में हमारे है ॥

दिखा आज़ादी न देंगे चैन तब तक न हम लेंगे ।

हटाना है कलंक भारत का, यही दिल में हमारे है ॥

(९)

चेतावनी

तैयार रहना चाहिये बलिदान होने के लिये ।

निज देश के गौरव के ऊपर जान देने के लिये ॥

देश को आगे बढ़ाना हर युवक का धर्म है ।

प्राण तक दे देंगे हम मान देने के लिये ॥

खून गर देना भी हो तो भी उजर कुछ भी नहीं ।
 निज देश अरु निज धर्म का आमान रखने के लिये ॥
 सूलियाँ चाहे हमें दे, जेल की या यातना ।
 इस गुलामी धर्म को स्वीकार करने के लिये ॥
 डरना नहीं है अब हमें जब तक कि दम में दम रहे ।
 पूर्वकृत अपमानों का बदला चुकाने के लिये ॥

(१०)

भारत के नवजवानो अपनी दशा सँभालो ।
 बिगड़ी हुई है अब जो, उसको ज़रा बचा लो ॥
 मरदानगी हटा कर किस ओर है छिपाया ।
 माता को अति रुलाया, अब तो उसे मना लो ॥
 फ़ैशन में पड़ गये क्यों, घर की ख़बर भुलाकर ।
 बरवाद हो चुके हैं, सब घर के लोग वालो ॥
 सब दिन तुम्हें पढ़ाया हासिल न कुछ भी पाया ।
 धन धर्म सब गवाँया, तुम पै ऐ शान वालो ॥
 इस शूट बूट में अब रक्खा ही क्या हुआ है ।
 ख़हर पहिन के अब सब भारत का दुःख टालो ॥
 चारों तरफ़ से ये जो अफ़वाहें आरही हैं ।
 मर करके देश ऊपर संसार यश कमालो ॥
 दुनिया में फिर से आकर, मानुष का तन है पाना ।
 बन कर शहीद जाना, निज धर्म देश वालो ॥

[=]

(११)

बेड़ियाँ भून भून बजेंगी जब समय आ जायगा ॥ टेक ॥
भूनकार की हम बेड़ियों पर होंगे कुर्बान सब ।
क़त्ल करवायेंगे गरदन जब समय आ जायगा ॥
सूलियाँ चढ़ जाँयगे हम इस वतन के वास्ते ।
शान भारतवर्ष की हरगिज़ न जाने पायेगा ॥
जब धर दिया आगे क़दम पीछे हटा सकते नहीं ।
जान चाहे जाय सब की प्रण न टलने पायेगा ॥
जा बसे मोहन जवाहिर, कृष्ण जन्म स्थान में ।
अब देश का उज्ज्वल ध्वजा संसार में फहरायगा ॥

(१२)

नव जबानो मर मिटो अब तो समय आ ही गया ।
निज देश को आज़ाद करने का समय आ ही गया ॥
क़त्ल हो जावे। वतन पर दिल कि दहशत छोड़ कर ।
नाम दुनियाँ में जगाने का समय आ ही गया ॥
तोप बन्दूकें फ़ौज ये सब हमारी क्या करें ।
जब प्राण बन्दा त्यागने मैदाने जंग आ ही गया ॥
एक दिन बीमारियों से हो असित मर जावगे ।
विश्व व्यापी नाम करने का समय आ ही गया ॥

इन विदेशी कातिलों से अब हमें डरना नहीं ।
 सुलियाँ चढ़ जाने का अब तो समय आ ही गया ॥
 मर मिटेंगे देश पर, हम मुख न मोड़ेंगे कभी ।
 देश को ऊपर उठाने का समय आ ही गया ॥
 सम्राट् भारतवर्ष को ले जाके रक्खा जेल में ।
 इसके लिये बदला चुकाने का समय आ ही गया ॥

(१३)

तैयार हो उठो अब भारत के नवजवानो ।
 माता तुम्हें परखती, सोते हो क्यों दिवानों ॥
 मौका नहीं है अब कुछ देरी लगा रहे क्यों ।
 जल्दी से आ डटो तुम भारत के नवजवानो ॥
 संग्राम विगुल भारत का अब तो बज चुका है ।
 डरना नहीं है हमको मरने से नवजवानो ॥
 सेना अध्यक्ष गाँधी इस फौज के रहेंगे ।
 आज़ाद कर दिखा दो, भारत को, नवजवानो ॥
 यह युद्ध अहिंसात्मक छिड़ने को जा रहा है ।
 जेलों की यातना से डरना नहीं जवानो ॥
 मग़दानगी इसी में देखी जायगी अब ।
 की कौन पुत्र भारत का सच्चा है नवजवानो ॥

(१४)

इस देश में आकर फ़कत एक काम कर जाने को है ।
 बुजदिली को छोड़ अब तो जान दे जाने को है ॥
 माता पिता अरु गुरु जनों की आज्ञा पालन करो ।
 कर देश सेवा भाइयों कि यदि, नाम कर जाने को है ॥
 इन गुलामी बेड़ियों को तोड़ना है अब हमें ।
 हमको केवल सुलियों पर, एक चढ़ जाने को है ॥
 बल बेदी पर हम जब तलक शिर देा चढ़ायेंगे नहीं ।
 आज़ादी माता देश में तब तक नहीं आने को है ॥
 जिस देश के रहते युवक सीना बड़ा आगे खड़े ।
 उस देश को देरी नहीं तब आगे बढ़ जाने को है ॥

(१५)

आ जाव वीरों ! बहुत दुख है मात पर अब आ पड़ा ।
 छोड़ कर दुनियाँ कि भंभट जंग में होवो खड़ा ॥ १ ॥
 माता पिता सुत बन्धु दारा धाम आवेंगे नहीं ।
 दौलत खजाना माल सब रह जायगा यहीं पड़ा ॥ २ ॥
 हो गये राजे महाराजे यहां कितने अनेक ।
 पर नाम दुनियाँ में रहा जो काम कीन्हा था बड़ा ॥ ३ ॥
 एक दिन संसार में मरना सभी को होवेगा ।
 मरना उसी का धन्य है जो युद्ध में आकर लड़ा ॥ ४ ॥
 निज देश पर कुर्बान हो सर्वस्व जिसने छो दिया ।
 उनके लिये इस मात को भी आज है रोना पड़ा ॥ ५ ॥

देश में आज़ादों का डंका बजाना चाहिये ।
 जो वीर सोये हैं उन्हें फौरन जगाना चाहिये ॥१॥
 क्यों पड़े हो बहुत दिन से कुम्भकर्णी नींद में ।
 छोड़कर आलस्य सब को जंग आना चाहिये ॥२॥
 नौजवानों जोश में जब तक नहीं आवोगे तुम ।
 देश का कल्याण तब तक न मनाना चाहिये ॥३॥
 चारों तरफ़ गिरफ़्तारियाँ जारी बड़े जोरोंसे हैं ।
 कुर्बान अपनेको, सभीको कर दिखाना चाहिये ॥४॥
 मौका नहीं पावोगे अब, ऐसा कभी वीरो उठो ।
 शक्ती लगा सारी, गुलामी को हटाना चाहिये ॥५॥
 आखिरी पासा है ये, निश्चय इसे तुम जान लो ।
 इस लिये हर एक को गरदन कटाना चाहिये ॥६॥

भारत का प्यारा दुलारा जवाहिर !

वतन का सहारा हमारा जवाहिर ॥१॥

बुलाने को आज़ादों भारत में फिर से,

गया जेल अन्दर हमारा जवाहिर ॥२॥

लिया छीन हमसे हमारा जवाहिर,

जो था आँख पुत नी का तारा जवाहिर ॥३॥

जवाहिर को देकर हम आज़ादी लेंगे,

औ जायेंगे जेलों में हमारा जवाहिर ॥४॥

भारत के युवको इसे तुम समझ लो,
अब सर्वस्व तुमपर है डारा जवाहिर ॥५॥
बहुत दिन से परवश हैं आज़ादी माता,
छुड़ाने गया है हमारा जवाहिर ॥६॥
देरी लगोगी जो आने में उनको,
तो वह जाय खूनोकी धारा जवाहिर ॥७॥
तैयार हो कर सभी जन यहाँ के,
कटार्येंगे गरदन ऐ प्यारा जवाहिर ॥८॥
धब्बा हटार्येंगे भारत का फौरन,
बहे जान जाये हमारा जवाहिर ॥९॥
तोपें औ बन्दूक फौजें करें क्या,
जो मरनेको हमसब सिधारा जवाहिर ॥१०॥
भरते जो जायेंगे जेलों के अन्दर,
तो चमकेगा फिरसे सितारा जवाहिर ॥११॥
मरने का डर जब हटार्येंगे दिल से,
तो घर घर बजेगा नकारा जवाहिर ॥१२॥

(१८)

देखा, नवयुवकों ने देखा, खुले आम यह अत्याचार ।
रक्त उतर आया आंखों में, हुआ न हृदय पर बज्र प्रहार ॥
इस शब्दों के साथ चुनौती की दीवानों ने स्वीकार ।
“कर देंगे हम कील कफन की शासन के उन पर के वार” ॥

इस नौकर शाही शासन को, करते जायेंगे प्रतिकार ।
 कानून भंग करते जायेंगे, चाहे यत्न तु करो हजार ॥
 देश के ऊपर कर कुर्बानी, जीवन बना लेंय उद्धार ।
 इस नौकर शाही का अब तो, नहीं करेंगे कुछ इतबार ॥
 जो लिया खून है चूस हमारा, जीवन बना दिया बेकार ।
 पशु पक्षी की तरह सदा, करते आये हमसे व्योहार ॥
 स्वामी भक्ति किया सभी ने, जब छिड़ा हुआ था जर्मनवार ।
 उसी के बदले में पड़ती है, अब हम पर डंडों की मार ॥
 अभी तलक मिन्नत करते, आये दिल से हम बारम्बार
 पर जूँ कान रेंगी भी नहीं, ऐसी है ये ज़ालिम सरकार ॥
 अहिंसात्मक शिक्षक को, जिसने दीन्हा है जेल में डार ।
 कितने को पेशावर में, गोली से जिसने कीन्हा वार ॥
 शोलापुर में किया मार्शल ला ज़ारी जो अन्तिम वार ।
 जिससे देश, राज्य शक्ति, दोनों का हो जावे संघार ॥
 जाय आश्रु निश्चय इसमें, जान लेय इसको सरकार ।
 किया था वादा स्वराज्य देना, अब कैसा जेल में दीन्हा डार ॥
 ऐसी चाल बाजि शासन में, जीना है सब को धिकार ।
 लगा शक्ति इकबार डटो सब, प्राण जाय चाहे इस बार ॥
 गोली से चाहे उड़ जायें, पाछे पग न पड़े हमार ।
 दमन नीति से डरें नहीं, हैं मरने को हरदम तैयार ॥
 सूली चाहे हमें देंय या देश से चाहे देंय निकार ।
 नहीं डिगेंगे युद्ध वीर सब, डटे रहेंगे अबकी बार ॥
 लें स्वराज्य यह ध्येय हमारा, जो है जन्म सिद्ध अधिकार ।

(१६)

अब तो ये सरकार तू ये ज़ालिमाना छोड़ दे ।
 आसुरी नीती का दिल से काम लाना छोड़ दे ॥१॥

क्या कोई भी राज्य कायम है रहा इस नीति से ।
 ज़ार के कानून को अब तो चलाना छोड़ दे ॥२॥
 शूलियां निर्दोष को देते चले जो जा रहे ।
 इस तरह की दमन नीती का लगाना छोड़ दे ॥३॥
 इन्सान का तो काम ये, इन्साफ़ करना चाहिये ।
 लाठियों के जोर से, शासन चलाना छोड़ दे ॥४॥
 इस तरह से नहिं रहेगा राज्य कायम अब तेरा ।
 इस लिये हर एक के दिल को दुखाना छोड़ दे ॥५॥
 निहत्थे निर्अपराधियों पर वार जो तुम कर रहे ।
 गोलियों बन्दूक का उन पर चलाना छोड़ दे ॥६॥
 हैं मनुष्य वे भी तुम्हारे ही तरह संसार में ।
 बन दोस्त तुम उनका रहो, पर हुक्मराना छोड़ दे ॥७॥

(२०)

बनो अब सत्याग्रही महान ॥टेक॥

उठो-उठो, हे चतुर बन्धुवर धरो देश का ध्यान ।
 वीरो ! अब तुम त्यागी बन कर करो देश कल्याण ॥बनो०॥
 हिंसा हीन वृत्ति को धारो रखो अपनी आन ।
 लहर का दृढ़ कवच पहिन कर करो युद्ध घमसान ॥बनो०॥
 बालक, वृद्ध, जवान सभी में ऐसा हो अभिमान ।
 मरें, मिटें, सब करें देश हित न्योछावर धन प्राण ॥बनो०॥

मुद्रकः—गोपीनाथ सरवरिया, राजपाली प्रेस, प्रयाग ।

प्रकाशकः—हजारीलाल, भूमी, प्रयाग